पाठ 11

दिल्ली सल्तनत

आइए सीखें

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना।
- दिल्ली सल्तनत के विभिन्न वंशों का राज्य विस्तार।
- प्रमुख शासकों के शासन की विशेषताएँ।

हम पढ़ चुके हैं कि मोहम्मद गोरी भारत के उत्तरी हिस्सों पर अपना अधिकार स्थापित कर चुका था। वह स्वयं गोर (मध्य एशिया की रियासत) में रहता था तथा अपने विजित प्रदेशों पर शासन चलाने के लिए अपने गुलाम अधिकारियों को नियुक्त करता था। उन दिनों मध्य एशिया में प्रथा थी कि युवकों को खरीद कर उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण देकर सुल्तान को बेच दिया जाता था। ये सुल्तान के गुलाम कहलाते थे। पश्चिमोत्तर भारत के विजित प्रदेशों का गवर्नर ऐसा ही एक गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक था।

गोरी की मृत्यु के पश्चात् ऐबक ने एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की जिसकी राजधानी लाहौर थी। उसे स्वतन्त्र शासक के रूप में सन् 1208 ई. में मान्यता मिली, यहीं से दिल्ली सल्तनत का शासन आरम्भ होता है।

गुलाम वंश (1206-1290 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक गुलाम वंश का संस्थापक था। मोहम्मद गोरी के प्रतिनिधि के रूप में उसने हाँसी, अजमेर, दिल्ली, मेरठ, बुलन्दशहर, कन्नौज, अलीगढ़, रणथम्भौर, गुजरात पर विजय प्राप्त की थी।

सुल्तान के रूप में उसने गजनी के शासक एल्दौज के साथ कूटनीतिक प्रयासों से अपने राज्य की रक्षा की। सिन्ध और मुल्तान के शासक कुबैचा की बढ़ती हुई शक्ति का दमन किया। बंगाल और बिहार के शासक को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया।

कुतुबुद्दीन ऐबक को भवन निर्माण में रूचि थी। उसने दिल्ली में कुतुबमीनार, कुव्बत-उल-इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में 'अढाई दिन का झोपड़ा' का निर्माण कराया। ऐबक को 'लाखबख्श' के नाम से भी जाना जाता है।

शिक्षण संकेत

- शिक्षक पाठ का अध्ययन पूर्व में करके कहानी के रूप में पाठ के मुख्य बिन्दुओं को सुनाएँ।
- मानचित्र की सहायता से शासकों के राज्य विस्तार को स्पष्ट करे।
- विभिन्न वंशों की तालिका बनवाएँ।

कुतुबुद्दीन की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र आरामशाह गद्दी पर बैठा, किन्तु अयोग्य होने के कारण दिल्ली के नागरिकों ने प्रधान काजी की सलाह से ऐबक के दामाद इल्तुतमिश को सिंहासन पर बैठने के लिए आमन्त्रित किया। आरामशाह परास्त हुआ उसका वध कर दिया गया और इल्तुतमिश दिल्ली का सुल्तान बना।

चित्र क्र.-29: कुतुबमीनार

इल्तुतमिश (1211-1236 ई.)

इल्तुतमिश को उत्तरी भारत में तुर्की राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। गद्दी पर बैठने के पश्चात उसे आन्तरिक और बाहरी समस्याओं का सामना करना पड़ा। उसने अमीर सरदारों के विद्रोह का दमन किया जिसमें प्रमुख थे कुबैचा, ऐल्दौज एवं बंगाल के विद्रोही शासक। जालोर और रणथम्भौर के शासक जो ऐबक की मृत्यु के पश्चात स्वतन्त्र हो गए थे, उनकी बढ़ती हुई शक्ति का दमन किया। मंगोल आक्रमण से अपने राज्य की रक्षा की। 1236 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

- **इल्तुतमिश ने अरबी प्रकार का टंका (तनका) सिक्का चलाया।**
- **सन् 1229 ई. में इल्तुतमिश को बगदाद के खलीफा द्वारा खिलअत (अभिषेक-पत्र) प्राप्त हुई, जिसमें उसे हिन्दुस्तान के सुल्तान की उपाधि दी गई थी।**
- **इल्तुतमिश ने 40 तुर्की अमीरों और गुलामों के दल को संगठित किया जो राज्य की शक्ति का प्रमुख आधार स्तम्भ था।**

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

इल्तुतमिश के पुत्र अयोग्य थे, इस कारण उसने अपनी योग्य पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी बनाया। रजिया पुरुषों के समान वस्त्र पहन कर दरबार में बैठती एवं युद्धों का नेतृत्व करती थी।

- **पुत्रों के होते हुए, पुत्री को सिंहासन पर बैठाना मध्यकालीन इतिहास में एक नया कदम था।**

अमीर तुर्की सरदार इसे बर्दाश्त नहीं कर सके और उसके विरुद्ध षडयन्त्र और विद्रोह करने लगे। इनमें से सबसे सशक्त विद्रोह भटिंडा के गवर्नर अल्तूनिया के नेतृत्व में हुआ। जिसे दबाने के लिए रजिया ने लाहौर पर चढ़ाई कर दी। युद्ध में उसका सेनापति याकूत मारा गया एवं रजिया को बन्दी बना लिया गया। बाद में रजिया ने अल्तूनिया से विवाह कर लिया। दोनों ने मिलकर दिल्ली पर चढ़ाई कर दी, जिसमें रजिया पराजित हुई, अन्ततः उसकी हत्या कर दी गई। रजिया के पश्चात बहराम शाह (1240-42 ई.), अलाउद्दीन (1242-46 ई.) और नासिरूद्दीन महमूद (1246-

65 ई.) तक सुल्तान बने किन्तु वे सभी अयोग्य थे।

बलबन (1266-1286 ई.)

इस समय 'चालीस तुर्की अमीरों' का दल अत्यधिक शक्तिशाली हो गया था। 1246 में इस दल ने इल्तुतमिश के पौत्र नासिरूद्दीन महमूद को सुल्तान बना दिया। महमूद ने बलबन नामक अमीर को अपना वजीर नियुक्त किया। संतानहीन नासिरूद्दीन की मृत्यु के पश्चात वजीर बलबन स्वयं सुल्तान बन गया।

- **बलबन ने बीस वर्ष तक नायब-ए-मुमलिकात (प्रधानमंत्री) पद पर रहकर तथा बीस वर्ष सुल्तान के रूप में निरंकुश शासन किया।**

बलबन ने सुल्तान बनते ही तुर्की अमीरों की शक्ति को नष्ट कर दिया क्योंकि वह सम्राट की निरंकुश शक्ति और प्रतिष्ठा में विश्वास रखता था। उसने स्वयं को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित किया और लोगों को सिजदा (घुटने पर बैठकर सिर को भूमि तक झुकाना) करने के लिए कहा।

बलबन ने अनेक विद्रोहों का दमन, भीषण नरसंहार और क्रूरता से किया। विद्रोहियों के प्रति अमानुषिक कठोर नीति के कारण उसे, 'लौह और रक्त' की नीति का सुल्तान कहा जाता है।

बलबन न्यायप्रिय शासक था एवं गुलामों के साथ अमानवीय व्यवहार करने वालों को कड़ी सजा देने का पक्षपाती था। उसने शक्तिशाली सेना एवं गुप्तचर विभाग का गठन किया, पुराने दुर्गों की मरम्मत करवायी तथा नए दुर्गों का निर्माण करवाया। दिल्ली के आस-पास के जंगलों को काटकर चौकियों का निर्माण करवाया। इस प्रकार उसने मंगोल और मेवातियों के आक्रमण से दिल्ली की रक्षा की और अपने साम्राज्य को विभिन्न आपदाओं से सुरक्षित रखा।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

जलालुद्दीन खिलजी (1290-1296 ई.)

जलालुद्दीन खिलजी, खिलजी वंश का संस्थापक था। दिल्ली के सरदारों ने 1290 ई. में गुलाम वंश के सुल्तान कैकूबाद की हत्या कर उसे सुल्तान बनाया। जिस समय वह गद्दी पर बैठा उसकी आयु 70 वर्ष की थी एवं वह साहसपूर्ण कार्य करने में अक्षम था। जलालुद्दीन का भतीजा अलाउद्दीन अवध का सूबेदार था। उसने देवगिरि पर आक्रमण किया, उसे जीता तथा अपार धन दौलत लेकर लौटा। अत्यधिक महत्वाकांक्षी होने के कारण उसने अपने चाचा एवं ससुर जलालुद्दीन का वध किया और स्वयं गद्दी पर बैठ गया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

अलाउद्दीन साम्राज्य विस्तार की नीति में विश्वास रखता था। वह विश्व विजेता बनना चाहता था तथा अपने को दूसरा सिकन्दर (सिकन्दर-ए-सानी) कहता था। उसने गुजरात, राजस्थान, उज्जैन,

चन्देरी एवं मांडव पर विजय प्राप्त की। उत्तर भारत में विजय प्राप्त करने के बाद मलिक काफूर के नेतृत्व में दक्षिण भारत के देवगिरि, वारंगल, द्वारसमुद्र के राजाओं को पराजित किया। मंगोलों ने कई बार आक्रमण किए जिन्हें वह रोकता रहा।

सैनिक सुधार- अलाउद्दीन की विजय का श्रेय उसकी सुसंगठित सेना को दिया जाता है। सैनिकों की नियुक्ति उनकी योग्यता के आधार पर की जाती थी। सैनिकों के रूप-रंग,कद-काठी का पूर्ण विवरण रखा जाता था।

मानचित्र क्र.-3: अलाउद्दीन खिलजी का साम्राज्य

उसने सैनिकों को नगद वेतन देने की प्रथा को अपनाया तथा घोड़ों को दागने की व्यवस्था की। पुराने किलों की मरम्मत करवाई तथा नए किलों का निर्माण कराया।

बाजार नियन्त्रण- अलाउद्दीन ने मंगोल आक्रमण से राज्य की सुरक्षा तथा साम्राज्य विस्तार के लिए बड़ी सेना रखना आवश्यक समझा। इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता थी। अतः उसने बाजार नियन्त्रण लागू किया। कुशल तथा ईमानदार कर्मचारियों की नियुक्ति की, जो व्यापारियों पर नियन्त्रण रखते थे। वस्तुओं की कीमतें निश्चित कर दी गई। दुकानदारों द्वारा बाजार के नियमों का पालन न करने पर कठोर दण्ड दिया जाता था। बाजार भाव में निगरानी रखने के लिए गुप्तचरों की व्यवस्था थी। सरकारी गोदाम स्थापित किए गए। अकाल पड़ने पर गोदामों से खाद्यान्नों की पूर्ति की जाती थी।

राजस्व नीति- उसने भूमि के माप के आधार पर लगान का निर्धारण किया। उपज का आधा हिस्सा भूमि राजस्व के रूप में तय किया। इसके अतिरिक्त चारागाह कर, आयात निर्यात, जजिया, खम्स, जकात आदि करों में वृद्धि की।

1316 ई. में अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई। 1320 ई.में गयासुद्दीन तुगलक ने खिलजी वंश के अंतिम शासक नासिरउद्दीन खुसरोशाह की हत्या करके स्वयं को सुल्तान घोषित किया।उ

तुगलक वंश (1320-1414 ई.)

गयासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.)

तुगलक वंश का संस्थापक गाजी मलिक था जो गयासुद्दीन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठा। गयासुद्दीन तुगलक ने अलाउद्दीन खिलजी की कठोर नीतियों के स्थान पर उदार नीति अपनाई तथा राज्य में शांति व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसने दिल्ली में तुगलकाबाद नगर की स्थापना की।

मोहम्मद-बिन-तुगलक (1325-1351 ई.)

गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र जूना खाँ मोहम्मद-बिन-तुगलक के नाम से उत्तराधिकारी बना। उसने राज्य की समस्याओं का समाधान किया।

मोहम्मद तुगलक की योजनाएँ- सुल्तान ने साम्राज्य की प्रगति और सुव्यवस्था के लिए नवीन योजनाएँ चलाई, उसकी मुख्य योजनाएँ इस प्रकार थी :—

राजधानी परिवर्तन- सुल्तान ने दिल्ली के स्थान पर, दक्षिण में देवगिरि, जिसका नाम दौलताबाद था, को अपनी राजधानी बनाया। दिल्ली निवासियों को दौलताबाद जाने के कठोर आदेश दिए। रास्ते के कष्ट और वहां की जलवायु दिल्लीवासियों को रास नहीं आई। पाँच वर्ष के भीतर राजधानी को पुनः दिल्ली स्थानांतरित करना पड़ा।

- **मोहम्मद तुगलक के शासन काल में इब्नबतूता नामक मोरक्को का यात्री भारत आया था। पहले उसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया तथा बाद में राजदूत की हैसियत से चीन भेज दिया गया।**

ताँबे की मुद्रा का प्रचलन- उस समय विश्व में चाँदी उत्पादन में कमी आ गई थी। सुल्तान ने चाँदी के सिक्कों के स्थान पर ताँबे के सिक्कों को चलाने का आदेश दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बाजार में भारी मात्रा में जाली सिक्के आ गए। इससे व्यापार और वाणिज्य में अव्यवस्था फैल गई और उसे पुनः चाँदी के सिक्के चलवाने पड़े।

दोआब में कर वृद्धि- राज्य की आय बढ़ाने के लिए सुल्तान ने गंगा और यमुना के बीच समृद्ध और उर्वरक भूमि 'दोआब' में कर बढ़ा दिया। जिस समय यह कर लगाया गया उस समय वहाँ अकाल पड़ा हुआ था, जिससे लोगों में भारी असन्तोष फैल गया।

सुल्तान द्वारा चलाई गई सभी योजनाएँ उचित क्रियान्वयन के अभाव में असफल रहीं। 1351 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ई.)

मोहम्मद तुगलक की मृत्यु के पश्चात फिरोजशाह तुगलक सुल्तान बना। उसने अमीर तथा उलेमाओं को सन्तुष्ट करने का प्रयास किया। इस्लाम के नियमों के अनुसार शासन चलाया। उसने जजिया को एक अलग कर बनाया तथा ब्राह्मणों पर भी लागू किया। उसके शासन की मुख्य विशेषता लोककल्याणकारी कार्य थे।

- उसने हिसार, फिरोजाबाद, जौनपुर, फिरोजपुर आदि नए नगर बसाये।
- सराय, जलाशय, अस्पताल, बगीचा तथा पुलों का निर्माण करवाया।
- दीवान-ए-खैरात विभाग की स्थापना की जो विधवाओं और अनाथों की सहायता करता था।

फिरोजशाह की मृत्यु के पश्चात उसके उत्तराधिकारी अयोग्य होने के कारण सल्तनत सिमट कर स्थानीय सूबों जैसी रह गई। इस वंश का अन्तिम शासक नासिरूद्दीन था। इसके शासनकाल में मंगोल शासक तैमूरलंग ने भारत पर आक्रमण किया। उसने सन् 1398 ई. में दिल्ली पहुँच कर नगर को लूटा और कत्लेआम करवाया। 1399 ई. में वह वापस लौट गया।

सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

तुगलक वंश के अन्तिम सुल्तान की मृत्यु के पश्चात खिज्र खाँ जिसे तैमूरलंग ने गवर्नर नियुक्त किया था, उसने दिल्ली पर अधिकार कर सैय्यद वंश की नींव रखी। इस वंश का अन्तिम शासक आलमशाह था। 1451 में दिल्ली के अमीरों ने पंजाब के अफगान शासक बहलोल लोदी को आमन्त्रित कर सिंहासन पर बैठा दिया।

लोदीवंश (1451-1526 ई.)

बहलोल लोदी (1451-1489 ई.)

बहलोल लोदी ने साम्राज्य को संगठित करने का प्रयत्न किया। बहलोल लोदी के पश्चात उसका पुत्र सिकंदर लोदी (1489-1517) सुल्तान बना। उसने अपनी राजधानी दिल्ली से हटाकर आगरा को बनाया। सिकन्दर लोदी ने प्रजा की भलाई और राज्य को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया।

इब्राहिम लोदी (1517-1526 ई.)

लोदी वंश का अन्तिम शासक इब्राहिम लोदी था। अफगान सरदारों ने अन्तिम लोदी सुल्तान का बड़ा विरोध किया और काबुल के शासक बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए बुलाया। 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित किया। इब्राहिम लोदी युद्ध में मारा गया। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत का अन्त हुआ।

सल्तनत के पतन के पश्चात नए-नए छोटे राज्यों का उदय हुआ। बंगाल, गुजरात, मालवा, मेवाड़, मारवाड़, जौनपुर, विजयनगर, कश्मीर, बहमनी आदि। इनमें से विजयनगर तथा बहमनी राज्यों का इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

बहमनी राज्य- बहमनी राज्य की स्थापना सन् 1347 ई. में अलाउद्दीन बहमन शाह ने की थी। बहमनी राज्य के अन्तर्गत कृष्णा नदी तक का सम्पूर्ण उत्तरी दक्कन आता था। इस वंश का महान शासक फिरोजशाह था। पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में बहमनी राज्य पाँच भागों में विभक्त हो गया— बीदर, बेरार, अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर।

विजयनगर- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर, और बुक्का नाम के दो भाइयों ने की थी। विजयनगर साम्राज्य कृष्णा नदी के दक्षिण तट तक फैला था और विजय नगर (कर्नाटक की हंपी) उसकी राजधानी थी। इस राज्य के प्रमुख शासक देवराय प्रथम, देवराय द्वितीय तथा कृष्णदेव राय थे।

विजयनगर और बहमनी शासकों में रायचुर दोआब को लेकर संघर्ष होते रहे। इस समय में कई विदेशी यात्री भारत आए, जिसमें इटली के निकोलोकोंटी, इरानी राजदूत अब्दुर्रज्जाक, पुर्तगाल के डोमिगों के नाम उल्लेखनीय है। इन यात्रियों ने अपने यात्रा वर्णन में विजयनगर के वैभव व विस्तार के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है।

दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण

1. **शासन व्यवस्था की दुर्बलता-** दिल्ली सल्तनत में योग्य शासकों का अभाव था। उन्होंने मजबूत शासन प्रणाली कायम करने की कोशिश नहीं की। उनका शासन सैनिक शक्ति तथा लूटमार पर टिका हुआ था। प्रान्तीय शासकों पर केन्द्रीय सरकार का नियन्त्रण मजबूत नहीं था।
2. **उत्तराधिकारी के निश्चित नियम का अभाव-** एक सुल्तान की मृत्यु के पश्चात गद्दी के लिए झगडा शुरु हो जाता था। जो व्यक्ति अधिक शक्तिशाली होता था, वह सुल्तान बन जाता था।
3. **आपसी फूट-** मुसलमानों में धार्मिक एकता तो थी किन्तु वे विभिन्न नस्लो, धर्मों, जातियों और कबीलों के थे, इसलिए उनमें आपस में प्रतिस्पर्द्धा रहती थी।
4. **हिन्दुओं के साथ अत्याचार व स्थानीय शासकों का विरोध-** दिल्ली सल्तनत के अधिकांश शासकों ने धार्मिक असहिष्णुता की नीति का अनुसरण किया। स्थानीय शासक इनको सहन न कर सके और वे सुल्तानों के विरूद्ध लगातार विद्रोह करते रहे।
5. **मोहम्मद तुगलक की भूलें-** मोहम्मद तुगलक की योजनाओं की असफलता ने साम्राज्य को कमजोर कर दिया। जनता में असन्तोष फैल गया।

6. तैमूर का आक्रमण- तैमूर आक्रमण से दिल्ली को धक्का लगा। उसने चारों ओर लूट पाट कत्लेआम मचा दिया। सल्तनत की सैनिक व आर्थिक व्यवस्था बिगड़ गई।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) आगरा को राजधानी बनाया था—

(अ) कुतुबुद्दीन ऐबक ने (ब) सिकंदर लोदी ने

(स) बलबन ने (द) फिरोज शाह ने

(2) इब्नबतूता किसके शासनकाल में आया था—

(अ) मोहम्मद बिन तुगलक (ब) रजिया

(स) अलाउद्दीन खिलजी (द) इब्राहिम लोदी

(3) मोहम्मद तुगलक ने सिक्के चलवाये—

(अ) चांदी के (ब) सोने के

(स) जस्ते के (द) ताँबे के

(4) बलबन ने वजीर के रूप में शासन किया—

(अ) 10 वर्ष (ब) 20 वर्ष

(स) 30 वर्ष (द) 40 वर्ष

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) गुलाम वंश का संस्थापक ------ था।

(2) जौनपुर नगर ------ ने बसाया था।

(3) तैमूरलंग ने सन् ------ में दिल्ली पर आक्रमण किया।

(4) अलाउद्दीन ने दक्षिण भारत की विजय का कार्य ------ सेनापति को सौंपा।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) तुर्की सरदारों ने रजिया सुल्तान का क्यों विरोध किया?

(2) बलबन की ''लौह और रक्त'' की नीति को समझाइए।

(3) फिरोज तुगलक के किन्हीं दो सुधारों को लिखिए?

(4) विजयनगर राज्य के प्रमुख शासकों के नाम लिखिए?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) अलाउद्दीन खिलजी के सुधारों का वर्णन कीजिए?

(2) मोहम्मद तुगलक की महत्वाकांक्षी योजनाएँ क्या थी? उनमें वह क्यों असफल रहा।

(3) दिल्ली सल्तनत के पतन के कारणों का वर्णन कीजिए?

परियोजना कार्य–

- दिल्ली सल्तनत के शासकों की सूची बनाइए, साथ ही उनके काल को दर्शाइए।

पाठ 12

सल्तनतकालीन प्रशासन एवं जनजीवन

आइए सीखें

- सल्तनत काल की प्रशासनिक व्यवस्था कैसी थी?
- इस काल में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक व्यवस्था में किस प्रकार के परिवर्तन आए।
- भक्ति-आंदोलन की विशेषताएँ क्या थी?

320 वर्षों के सल्तनत काल में मुस्लिम शासकों ने अपनी परंपरा और आवश्यकतानुसार प्रशासन व्यवस्था में अनेक परिवर्तन किए। इसी प्रकार भारतीय समाज और संस्कृति (भाषा साहित्य, वास्तुकला व धर्म आदि) में भी मुस्लिमों के सतत् संपर्क से अनेक परिवर्तन सामने आए।

1. प्रशासनिक व्यवस्था

सुल्तान की शक्ति सर्वोच्च होती थी। उसे ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था। सत्तारूढ़ होने पर सुल्तान के नाम का 'खुतबा' पढ़ा जाता था तथा उसके नाम के सिक्के जारी किए जाते थे।

प्रशासनिक कार्यों में वजीर, उलेमा (धर्मशिक्षक) और अमीरों का सहयोग महत्वपूर्ण था।

केन्द्रीय शासन के चार महत्वपूर्ण विभाग थे-

(अ) राजस्व तथा लोक प्रशासन (ब) सैन्य विभाग (स) राजकीय पत्र व्यवहार (द) शिक्षा और अनुदान। इन विभागों के अधिकारियों को क्रमशः दीवान-ए-विजारत, दीवान-ए-अर्ज, दीवान-ए-इंशा और दीवान-ए-रिसालत कहा जाता था।

राज्य सूबों में और सूबे शिको में, शिक परगनों (जिलों) में बंटे हुए थे। सूबे का प्रमुख वली या मुफ्ती, शिक का प्रमुख शिकदार और परगने का मुखिया आमिल कहलाता था।

- **तेरहवीं शताब्दी में सुल्तानों ने राज्य को सैनिक क्षेत्रों में विभाजित किया था। इन्हें इक्ता कहा जाता था। इसका मुख्य अधिकारी इक्तादार कहलाता था। इक्ता प्रणाली का प्रारंभ इल्तुतमिश द्वारा किया गया था।**

2. सामाजिक जीवन-

(1) समाज में मुख्यतः हिन्दू और मुस्लिम जनसंख्या निवास करती थी। समाज में उच्च वर्ग के लोग (अमीर व सरदार) सुल्तानों का अनुकरण करते हुए विलासिता का जीवन व्यतीत करते थे।

शिक्षण संकेत

- सल्तनत काल के प्रशासनिक अधिकारियों के नामों की सूची तैयार करवाएँ।
- सल्तनत काल में देश से निर्यात एवं आयात की जाने वाली वस्तुओं की सूची छात्रों से बनवाएँ।

(2) ब्राह्मण और उलेमाओं (धर्मशिक्षक) का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था।

(3) जाति-व्यवस्था का पालन कठोरता से किया जाता था। स्त्रियों की स्वतंत्रता बहुत सीमित हो गई थी और पर्दा प्रथा का चलन बढ़ता जा रहा था।

(4) समाज में बाल विवाह, बहु-विवाह, सती प्रथा का प्रचलन था।

(5) मुस्लिम सुल्तानों में दास (गुलाम) प्रथा का प्रचलन था, उनके पास बड़ी संख्या में दास होते थे। कहा जाता है कि फिरोजशाह तुगलक के पास 1,80,000 गुलाम थे।

- **मोरक्को के यात्री इब्नबतूता ने अपने वर्णन में हिन्दुओं द्वारा किए जाने वाले 'आतिथ्य-सत्कार' की प्रशंसा की है।**

3. आर्थिक व्यवस्था

(1) सल्तनत काल में ग्रामीणों के आर्थिक जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया, इनका मुख्य व्यवसाय (पूर्व की तरह) कृषि था।

(2) नगरों में व्यापार बहुत उन्नति कर रहा था। भड़ौच, खंभात, मुल्तान, लखनौती, सुनारगाँव आदि प्रमुख नगर व बंदरगाह थे।

(3) शिल्पकार अपने शिल्प के अनुसार नगर के अलग-अलग भागों में रहते थे। जैसे सारे सुनार एक बस्ती में, लुहार एक बस्ती में व जुलाहे एक बस्ती में रहते थे।

(4) वस्तुओं को हाट-बाजारों के माध्यम से खरीदा व बेचा जाता था। दिल्ली व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। जहाँ देश के विभिन्न भागों से सामान आता था।

(5) भारत में जल-थल दोनों मार्गों से विदेशी व्यापार पनप रहा था।

निर्यात की मुख्य वस्तुएँ- सूती व रेशमी कपड़ा, जड़ी-बूटी, धातु के बर्तन, हाथी दाँत की वस्तुएँ आदि। काँच के बर्तन, व घोड़ों का आयात किया जाता था।

(6) राज्य की आय का मुख्य साधन भूमि कर था, जो उपज का 1/2 या 1/3 भाग था। इसके अतिरिक्त चुंगीकर, सिंचाई कर, खनिज संपत्ति, मकान कर, तीर्थ यात्रा कर आदि राज्य की आय के अन्य साधन थे।

- **हिन्दुओं और अन्य गैर मुस्लिमों से जजिया कर और मुसलमानों से जकात नामक कर लिया जाता था।**
- **इब्नबतूता ने दिल्ली का वर्णन करते हुए लिखा है कि, दिल्ली सबसे अधिक सुन्दर नगर था। देश के सभी भागों से दिल्ली नगर में सामान आता था।**
- **सुल्तानों द्वारा चांदी के टंके व तांबे की दरहम नामक मुद्रा चलाई गई।**

भाषा साहित्य एवं विज्ञान-

(1) प्राथमिक शिक्षा केन्द्र पूर्ववत् मंदिर व मस्जिद होते थे। कुछ स्थानों पर प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गयी थी।

(2) उच्च शिक्षा के लिए टोल (महाविद्यालय) व मदरसों की व्यवस्था होती थी।

(3) केन्द्रीय स्तर पर फारसी भाषा का प्रयोग होता था, जिसके प्रभाव से भारतीय भाषाओं में भी फारसी के बहुत से शब्दों का प्रयोग होने लगा था।

(4) हिन्दी और फारसी के सम्मिश्रण से इस काल में एक नई भाषा 'उर्दू' का जन्म हुआ, जो पारस्परिक बोलचाल की भाषा बन गई थी।

(5) उर्दू भाषा का व्याकरण हिंदी की तरह ही है, किन्तु इसके शब्दकोश में फारसी व हिन्दी भाषाओं के शब्द लिए गए है।

(6) इस काल में क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ, जिनमें उत्तम साहित्य की रचना हुई।

(7) कुछ हिन्दू राज्यों (जैसे विजयनगर) के राज दरबार में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया जाता था। संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद, भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अरबी व फारसी भाषा में भी होने लगे थे।

(8) कागज का प्रचलन बढ़ने से अनेक प्राचीन ग्रंथों का पुनः लेखन हुआ।

इस काल के प्रसिद्ध दार्शनिक व साहित्यकार अमीर खुसरो ने अपनी रचनाओं में उर्दू, फारसी व हिन्दी भाषा का प्रयोग किया। वे पहले ऐसे मुस्लिम लेखक थे, जिन्होंने सर्वाधिक रचनाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया। इस काल के प्रसिद्ध कवि व लेखकों ने निम्नलिखित ग्रंथों की रचना की—

(1)	श्रीनाथ	-	हरविलास
(2)	मलिक मोहम्मद जायसी	-	पद्मावत्
(3)	अमीर खुसरो	-	पहेलियाँ-मुकरियाँ
(4)	नरपतिनाल्ह	-	बीसलदेव रासो तथा खुमान रासो
(5)	विद्यापति	-	मैथिली भाषा में लिखे पद

कबीर दास जी के दोहे व भक्ति गीत प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

- **अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो व अमीर दहलवी रहते थे। खुसरो अपनी पहेलियों, दोहों व कव्वालियों के लिए प्रसिद्ध हैं।**

चिकित्सा- इस काल में मौलाना बदरूद्दीन, मौलाना सदरूद्दीन तथा अजीमुद्दीन प्रसिद्ध चिकित्सक थे। शल्य चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध वैद्य मच्छेन्द्र व जोग का नाम उल्लेखनीय है।

बर्नी ने अपनी पुस्तक तारीख-ए-फीरोजशाही में चिकित्सकों व खगोल शास्त्रियों की एक लंबी सूची प्रस्तुत की है।

वास्तुकला- तुर्क और अफगानों के आगमन के साथ- (फारस और मध्य एशिया) वास्तुकला की नई शैली भी भारत आई।

प्राचीन भारतीय वास्तुकला शैली में इस नई शैली के सम्मिश्रण से वास्तुकला के एक नवीन रूप का विकास हुआ।

(1) नुकीले मेहराब और गुम्बद तथा ऊंची सँकरी मीनारें इस काल की वास्तुकला की महत्वपूर्ण विशेषता थी।

(2) इस समय के अनेक शासकों ने उल्लेखनीय निर्माण कार्य करवाए, जिनमें प्रमुख हैं (अ) दिल्ली की कुतुबमीनार, (ब) फिरोजशाह का दुर्ग- फिरोजशाह कोटला, (स) अलाई दरवाजा, (द) लाल महल, (इ) तुगलकाबाद का किला, (ई) लोदी सुल्तानों के रंग-बिरंगे खपरैलों की डिजाइनों से सजे मकबरे।

जौनपुर के शासकों द्वारा बनवाई गई, अनेक मस्जिदें और मालवा के शासकों द्वारा मांडू की पहाड़ियों पर सुंदर राजमहल बनवाये गए। इस काल में दक्षिण में बीजापुर का गोलगुंबद बनाया गया जो संसार के बड़े गुंबदों में प्रमुख माना जाता है।

(3) दक्षिण के शासकों ने किलों के अंदर शानदार इमारतें बनवायी। दौलताबाद और गोलकुंडा के किले इसके प्रमुख उदाहरण है।

(4) सुदूर दक्षिण में विजयनगर के शासकों द्वारा मंदिरों का निर्माण व जीर्णोंद्वार करवाया गया। इनके द्वारा बनवाई गई इमारतों की सजावट व नक्काशी बहुत सुंदर है।

चित्रकला- लघु-चित्रों को बनाने की परंपरा इस समय जारी थी। शासकों द्वारा कलाकारों को राजाश्रय दिया जाता था। ये कलाकार शासकों व दरबारियों की पुस्तकों को चित्रों के माध्यम से सजाने का कार्य करते थे।

संगीत- फारस और अरब की संगीत शैली का प्रभाव, भारतीय संगीत पर पड़ा। दोनों के समन्वय से सितार, सारंगी, तबला, जैसे वाद्य-यंत्र लोकप्रिय हुए तथा गाायन की नई विधा कव्वाली का उदय हुआ।

धार्मिक-आंदोलन- इस काल में हिन्दू व मुस्लिम दोनों में ही जाति-प्रथा की कठोरता, आडम्बर जैसी अनेक कुरूतियाँ पनप रही थी। अतः इन सामाजिक बुराईयों को दूर कर समाज को सुसंगठित करने के उद्देश्य से कुछ समाज सुधारकों व संतों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता में परस्पर प्रेम व सद्भाव को बढ़ाने का प्रयास किया। इस आंदोलन का आरम्भ रामानंद ने किया था। संतों ने जिन भावनाओं को व्यक्त किया, वे कबीर और नानक की रचनाओं के रूप में व्यापक रूप से व्यक्त हुई।

इन सभी में धार्मिक कर्मकाण्डों की अपेक्षा भक्ति-भाव से प्रेमपूर्वक ईश्वर की उपासना करने पर बल दिया। यह विचारधारा दक्षिण से उत्तर तक, पूर्व से पश्चिम तक फैल गई और भक्ति-आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध हुई।

भक्ति-आन्दोलन- भक्ति आन्दोलन ने भारतीय समाज में एक नई चेतना का निर्माण किया। ये आन्दोलन जन-सामान्य में बहुत लोकप्रिय हुए, क्योंकि इस आन्दोलन के सभी संतों द्वारा अपने उपदेश, पदों व गीतों में स्थानीय भाषा का प्रयोग किया गया था।

भक्ति आन्दोलन के सूत्रधार आलवार व नयनार सन्तों ने कहानियों और गीतों के माध्यम से भक्ति भावना की परम्परा को प्रारम्भ किया था। दक्षिण के वल्लभाचार्य ने मथुरा, वृन्दावन, वाराणसी में कृष्ण के प्रति समर्पित भक्ति का प्रचार-प्रसार किया। बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण-लीला के बहुत से पदों की रचना की तथा देश के अन्य भागों में भक्ति के उपदेश देते हुए लोगों को अपने भक्तिपद सिखाये।

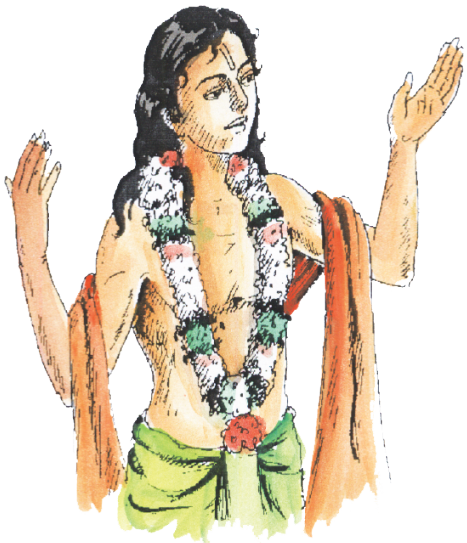

चित्र क्र.-30: चैतन्य महाप्रभु

चित्र क्र.-31: कबीर

महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर ने भक्ति के उपदेश दिये तथा गीता को मराठी भाषा में लिखा। जिससे संस्कृत न समझने वाले भी उसे समझ सकें। यहाँ नामदेव तथा तुकाराम दोनों ने प्रेम के माध्यम से ईश्वर की भक्ति करने का उपदेश दिया। कबीरदास बनारस में रहते थे। उन्होंने दोहों की रचना करके 'हिन्दु-मुस्लिम' एकता का प्रयास किया तथा सभी धर्मों को समान बताते हुए कर्मकाण्ड, आडम्बर व धार्मिक कट्टरता का विरोध किया।

गुरुनानक देव- इनका जन्म पंजाब के एक गाँव तलवण्डी (वर्तमान में पाकिस्तान में) में हुआ था। इन्होंने पूरे देश की यात्रा की और ईश्वर के निकट पहुँचने का मार्ग केवल प्रेमपूर्ण भक्ति ही बताया। जातिगत भेदभाव का विरोध किया व सभी मनुष्यों व धर्मों को समान बताया। इनके द्वारा दिये गये उपदेशों को एक पुस्तक में संग्रहित किया गया जिसे 'आदिग्रन्थ' कहते हैं। नानक देव सिक्ख-सम्प्रदाय के संस्थापक थे।

चित्र क्र.-32: गुरुनानक देव

सूफी सम्प्रदाय- मुस्लिम विचारकों, चिन्तकों व सन्तों का समुदाय 'सूफी-सम्प्रदाय' था। भक्ति-आन्दोलन के सन्तों के समान

ही सूफी सम्प्रदाय के सन्तों ने ईश्वर के निकट पहुंचने का मार्ग सच्ची भक्ति व प्रेम बताया। समाज की सेवा करना, अन्य धर्मों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखना तथा आडम्बर व कट्टरवाद का विरोध करना ही सूफी सन्तों के उपदेशों में समाहित था। सूफी सन्तों द्वारा हिन्दी व स्थानीय भाषाओं में भी भक्ति गीत गाये जाते थे।

भक्ति-आन्दोलन का जन-जीवन पर प्रभाव- भक्ति आन्दोलन ने धर्म व समाज दोनों क्षेत्रों में व्याप्त आडम्बर व कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस आन्दोलन ने समाज में हिन्दू-मुसलमानों के भेद व अलगाव को दूर कर दोनों को निकट लाने का प्रयास किया।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) सल्तनत काल की प्रशासनिक व्यवस्था में प्रमुख विभाग कितने थे-

(अ) दो (ब) पाँच

(स) चार (द) सात

(2) व्यापार का प्रमुख केन्द्र कौन सा था, जहाँ देश के विभिन्न भागों से सामान आता था-

(अ) दिल्ली (ब) बंगाल

(स) गुजरात (द) मुल्तान

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(कोष्ठक में दिये गये शब्दों में से सही शब्द चुनकर भरें)

(1) हिन्दी और फारसी के सम्मिश्रण से इस काल में एक नई भाषा --------- का जन्म हुआ।

(तमिल, उर्दू, कन्नड़)

(2) इस काल के प्रसिद्ध दार्शनिक व साहित्यकार ---------- ने अपनी रचनाओं में उर्दू, फारसी व हिन्दी भाषा का प्रयोग किया।

(अमीर खुसरो, कबीरदास, नानक, मुइनुद्दीन चिश्ती)

(3) शल्य चिकित्सा के लिये वैद्य ---------- व ---------- का नाम प्रसिद्ध था।

(सद्रुद्दीन व अजीमुद्दीन, मच्छेन्द्र व जोग, वद्रुद्दीन व बर्नी)

3. निम्नलिखित की सही जोड़ियाँ बनाइए–

(1) कुतुबमीनार - बीजापुर

(2) गोल गुंबद - दिल्ली

(3) कबीर ने - सिख सम्प्रदाय की स्थापना की थी

(4) गुरुनानक - हिन्दु, मुसलमानों के भेद-भावों को दूर करने का प्रयास किया।

4. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) सल्तनत काल की सामाजिक व्यवस्था के कोई दो मुख्य बिन्दु लिखिए?

(2) सल्तनत काल में राज्य की आय के प्रमुख साधन क्या थे?

(3) सल्तनत कालीन वास्तुकला की दो विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए?

(4) भक्ति आन्दोलन के सन्तों द्वारा दी गई प्रमुख शिक्षाएँ क्या थीं?

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) सल्तनतकालीन भाषा एवं साहित्य का वर्णन कीजिए?

परियोजना कार्य–

- भक्ति आन्दोलन व सूफी सन्तों के नाम एकत्रित कर उनकी सूची बनायें और उनके बारे में जानकारी एकत्रित करें।

पाठ 13

मुगल साम्राज्य की स्थापना एवं उत्कर्ष

(बाबर, हुमायूँ, शेरशाह व अकबर)

आइए सीखें

- भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना किन परिस्थिति में हुई थी?
- हुमायूँ को किस कारण से निर्वासित जीवन अपनाना पड़ा?
- मध्यकालीन भारतीय इतिहास में शेरशाह का क्या स्थान है?
- अकबर ने मुगल साम्राज्य को किस प्रकार सुदृढ़ किया?
- अकबर के शासनकाल की क्या विशेषताएँ थीं?

बच्चों, पिछले पाठ में हमने सल्तनतकालीन प्रशासन एवं जनजीवन के बारे में जाना। अब हम मुगल साम्राज्य की स्थापना के बारे में जानेंगे।

बाबर के आक्रमण के समय भारत में राजनैतिक अस्थिरता थी। ऐसी केन्द्रीय सत्ता का अभाव था, जो राजनैतिक एकता को स्थापित कर सीमा सुरक्षा की व्यवस्था कर सके। भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा असुरक्षित थी और आक्रमणकारियों को रोकने वाली कोई शक्ति नहीं थी। इसके अतिरिक्त राजनैतिक वैमनस्यता, षडयंत्र और शत्रुता व्यापक रूप से फैली हुई थी।

दिल्ली पर लोदी वंश के इब्राहिम लोदी का शासन था, जिसने अपने दुर्व्यवहार से अफगान अमीरों को अपना शत्रु बना लिया था। इन परिस्थितियों में परस्पर संघर्षरत राज्य किसी भी शक्तिशाली आक्रमणकारी का सरलता से शिकार बन सकते थे।

■ बाबर

जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक था। वह तैमूर का वंशज था। सामान्य रूप से उसे मुगल कहा गया है। सन् 1494 में बाबर को विरासत में फरगाना (मध्य एशिया में) का छोटा-सा राज्य मिला। वहाँ अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाने एवं राज्य विस्तार के उद्देश्य से उसने पाँच बार भारत के विभिन्न स्थानों पर आक्रमण किया। अपने पाँचवे आक्रमण में उसने दिल्ली के अफगान शासक इब्राहीम लोदी को अप्रैल 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में परास्त किया। इस समय उत्तर भारत की राजनैतिक शक्ति राजपूतों और अफगानों के बीच विभाजित थी। तत्कालीन मेवाड़ के महानतम राजपूत शासक राणा साँगा को बाबर ने 16 मार्च, 1527 ई. को आगरा के निकट खानवा के युद्ध में परास्त किया। 1528 में चन्देरी के युद्ध में मेदिनीराय को एवं 1529 ई. में बाबर ने अफगानों को घाघरा के युद्ध में हराया। अब भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना का कार्य सरल हो गया।

26 दिसम्बर 1530 ई. को आगरा में बाबर की मृत्यु हो गई। बाबर की आत्मकथा

'तुजुक-ए-बाबरी' (बाबरनामा) है, जो तुर्की भाषा में लिखी गई थी।

■ हुमायूँ

बाबर की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र हुमायूँ दिल्ली की गद्दी पर बैठा। हुमायूँ के तीन भाई थे — कामरान, अस्करी एवं हिन्दाल। बाबर ने मुगल वंश की स्थापना तो कर दी, किन्तु शत्रुओं से उसको सुरक्षित बनाने के लिए अधिक समय तक जीवित नहीं रहा। इसलिए हुमायूँ को गद्दी पर बैठने के बाद अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। हुमायूँ के प्रमुख प्रतिद्वन्दी अफगान सरदार थे, इनमें शेरशाह मुख्य था। सन् 1539 ई. में शेरशाह ने हुमायूँ को चौसा के युद्ध में परास्त कर उसे दिल्ली की गद्दी छोड़कर ईरान भागने पर मजबूर कर दिया।

■ शेरशाह सूरी

शेरशाह बिहार की एक छोटी-सी जागीर के अफगान सरदार का पुत्र था। उसके बचपन का नाम फरीद था। उसने निहत्थे एक शेर का शिकार किया था, इसलिए वहाँ के शासक ने उसे शेरखाँ की उपाधि दी थी।

बाबर के हाथों पानीपत और घाघरा के युद्धों में परास्त होने पर भी अफगानों की शक्ति पूर्ण रूप से नष्ट नहीं हुई थी। शेरशाह ने उन्हें पुनः संगठित कर उनमें एक नई जान फूंक दी। उसने अपनी प्रतिभा और साहस के बल पर हुमायूँ को अपदस्थ करके दिल्ली के राजसिंहासन पर अधिकार कर लिया। हुमायूँ को लगभग 15 वर्ष निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा। इस अवधि में शेरशाह और उसके उत्तराधिकारियों ने उत्तर भारत पर शासन किया। शेरशाह के अल्पकालीन शासन का भारतीय इतिहास में प्रमुख स्थान है, क्योंकि उसने अफगानों की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया और प्राचीन शासन व्यवस्था को पुनर्जीवित कर उसमें मौलिक सुधार किए जिसने भविष्य के लिए आधार स्तंभ का कार्य किया।

- **1539 ई. में चौसा के युद्ध में एवं 1540 ई. में कन्नौज के युद्ध में शेरशाह ने हुमायूँ को परास्त किया।**
- **निर्वासित जीवन के दौरान 15 अक्टूबर 1542 ई. को अमरकोट के राजा वीरसाल के महल में हुमायूँ को अकबर के रूप में पुत्र रत्न प्राप्त हुआ।**

शेरशाह का शासन प्रबन्ध

शेरशाह मध्यकालीन भारत का महान शासक था। उसने शासन में जनता के हितों को सर्वोपरि रखा। जिस कुशल प्रशासन तंत्र की शेरशाह ने नींव रखी, उसका लाभ मुगलों को मिला। शेरशाह ने सैनिक प्रशासन, न्याय व्यवस्था और भू-राजस्व के क्षेत्र में अनेक कार्य प्रारंभ किए, जिनका अनुसरण बाद में अकबर ने किया।

शेरशाह ने अपने साम्राज्य को प्रान्तो में और प्रान्तो को सरकारों में विभाजित किया, जिन्हें पुनः परगनों में विभाजित किया गया। सरकारों और परगनों के अधिकारियों को समय-समय पर

स्थानांतरित किया जाता था। उसने समान न्याय व्यवस्था लागू की तथा मुद्रा व्यवस्था में सुधार किया। उसके द्वारा चलाया गया चाँदी का सिक्का जो ''रूपया'' के नाम से जाना जाता था, वह मुगलकाल में तथा उसके बाद 1835 तक प्रचलित रहा। उसने यात्रियों के लिए कुओं और सरायों की व्यवस्था की एवं वृक्षारोपण करवाया। शेरशाह ने मौर्यकाल में निर्मित कलकत्ता से पेशावर को जोड़ने वाले पुराने राजमार्ग ग्रॉन्ड ट्रंक रोड़ का पुनर्निर्माण (वर्तमान जी.टी. रोड) करवाया।

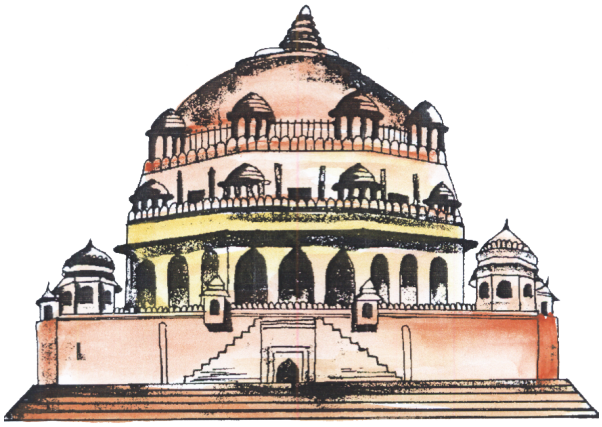

चित्र क्र.-33: शेरशाह का मकबरा

आगरा से राजस्थान एवं गुजरात तक तथा दक्षिण में बुरहानपुर तक सड़कों का निर्माण करवाया। उसने झेलम नदी के तट पर रोहतासगढ़ एवं दिल्ली के निकट शेरगढ़ नामक नगरों का निर्माण करवाया। बिहार के सासाराम नामक स्थान पर उसके द्वारा निर्मित मकबरा उसके महान व्यक्तित्व तथा कला का अप्रतिम उदाहरण है।

शिक्षा के क्षेत्र में उसने मदरसों का निर्माण करवाया। प्रशासन के क्षेत्र में उसे अकबर का पूर्वगामी कहा जाता है।

शेरशाह केवल पाँच वर्ष ही शासन कर सका। सन् 1545 में जब उसने कालिंजर के किले का घेरा डाला था, तभी बारूद के एक ढेर में आग लगने से वहीं खड़े शेरशाह की मृत्यु हो गई।

- **शेरशाह द्वारा बनवाई सड़कें राज्य की नसें कहलाती थीं।**
- **वह केन्द्रीय शासन में विश्वास करता था तथा विधायी, प्रशासनिक तथा न्याय की शक्तियाँ सम्राट के हाथों में थीं। कर्मचारियों को नगद वेतन देने की व्यवस्था थी।**
- **समस्त भूमि की माप करवाई गई।**
- **गुप्तचर व्यवस्था सुदृढ़ थी।**

शेरशाह के उत्तराधिकारी अयोग्य सिद्ध हुए। इससे उत्तरी भारत के राज्य की स्थिति दुर्बल हो गई। प्रमुख सरदार और अधिकारी आपस में लड़ने लगे। हुमायूँ ने इस स्थिति का लाभ उठाया। उसने ईरान के शाह की सहायता से कंधार और काबुल को जीत लिया। सन् 1555 में हुमायूँ ने पंजाब को जीतकर दिल्ली और आगरा पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार भारत में फिर से मुगल शासन की स्थापना हो गई। सन् 1556 में अपने महल के पुस्तकालय की सीढ़ियों से फिसल कर गिरने से उसकी मृत्यु हो गई। उसका पुत्र अकबर उसका उत्तराधिकारी बना।

■ अकबर

अकबर का जन्म सन् 1542 में अमरकोट (सिंध) के हिन्दू राजा वीरसाल के महल में हुआ था। उस समय हुमायूँ शेरशाह से परास्त होकर हिन्दू राजा की शरण में था।

हुमायूँ के पश्चात् सन् 1556 में जब अकबर को बादशाह घोषित किया गया तब उसकी आयु केवल 13 वर्ष की थी। चूँकि अभी वह बहुत छोटा था इस कारण बैरमखाँ को उसका संरक्षक नियुक्त किया गया। राज्यारोहण के समय भारत में अकबर की स्थिति मजबूत नहीं थी। आदिलशाह सूर ने अपने प्रधानमंत्री हेमू विक्रमादित्य के नेतृत्व में मुगलों को परास्त कर आगरा एवं दिल्ली पर अधिकार कर लिया था। पंजाब भी सिकन्दरशाह सूर के अधिकार में था। राज्य की आर्थिक स्थिति भी बिगड़ी हुई थी।

1556 ई. में हेमू विक्रमादित्य एवं बैरमखाँ के बीच पानीपत के मैदान में घमासान युद्ध हुआ। इसे पानीपत का द्वितीय युद्ध कहा जाता है। इसमें हेमू परास्त हुआ और आगरा एवं दिल्ली अकबर के नियंत्रण में आ गए। आगरा को मुगल साम्राज्य की राजधानी बनाया गया। अगले चार वर्षों तक बैरमखाँ प्रधानमंत्री एवं बादशाह के संरक्षक के रूप में सर्वोच्च स्थान पर रहा। 1560 ई. में बैरमखाँ को हज के लिए मक्का भेज दिया गया, किन्तु रास्ते में ही गुजरात में उसकी हत्या हो गई। अब शासन की बागड़ोर अकबर के हाथों में आ गई।

अकबर ने विजय तथा साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण की नीति अपनाई। जौनपुर, ग्वालियर, अजमेर, मालवा पर उसने अधिकार कर लिया।

मालवा और गोंड़वाना राज्य विजय

इन दिनों दो महत्वपूर्ण राज्य थे - मान्डू और गोंड़वाना । गोंड़वाना-गोंड़ राजाओं का राज्य था। अकबर के समय यहाँ रानी दुर्गावती शासन कर रही थी। आसफखाँ ने गोंड़वाना राज्य पर आक्रमण कर दिया। रानी दुर्गावती ने स्वयं तलवार लेकर शत्रुओं का डटकर मुकाबला किया, किन्तु जब विजय की कोई आशा नहीं रही तो उसने स्वयं अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली।

चित्र क्र.-34: महाराणा प्रताप

अपनी स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से अकबर ने राजपूतों से वैवाहिक संबंध की नीति अपनाई। मेवाड़ अकेला ऐसा राजपूत राज्य था, जिसने अन्त तक मुगलों की सत्ता स्वीकार नहीं की।

हल्दी घाटी का युद्ध

1576 ई. में हल्दीघाटी के मैदान में मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप और मुगल सेना के बीच घमासान युद्ध हुआ। जिसमें मुगल विजयी रहे। महाराणा प्रताप और उनके साथी सैन्य एकत्रीकरण के उद्देश्य से सुरक्षित स्थान पर चले गये। हल्दीघाटी में परास्त होने पर भी महाराणा प्रताप ने मुगलों से अपनी मातृभूमि को मुक्त कराने का संकल्प नहीं छोड़ा। अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी चित्तौड़,

अजमेर और मण्डलगढ़ को छोड़कर वे सारे मेवाड़ को जीतने में सफल रहे। सारा राजस्थान उनके यश से गुंजायमान है। स्वयं अकबर भी महाराणा प्रताप की प्रशंसा करता था। सन् 1597 में यह महान राजपूत सेनानी स्वर्ग सिधार गया।

गुजरात को जीतकर अकबर ने उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया। गुजरात विदेशी व्यापार एवं वाणिज्य का प्रमुख केन्द्र था। 1595 ई. में अकबर ने कश्मीर, सिन्ध, उड़ीसा तथा बंगाल पर विजय प्राप्त कर उत्तर भारत में अपनी स्थिति सुदृढ़ बना ली। संपूर्ण भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के उद्देश्य से उसने दक्षिण की ओर कूच किया। खानदेश, अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुण्डा के राज्यों को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। उन दिनों अहमदनगर राज्य पर चाँद बीबी अपने अवयस्क भतीजे की संरक्षिका के रूप में शासन कर रही थी। उसने मुगल सेना का बड़ी वीरता से सामना किया और अन्त तक हार नहीं मानी। चाँद बीबी की मृत्यु के बाद अहमदनगर का राज्य मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

अकबर की राजपूत नीति

अपने साम्राज्य का विस्तार करने के प्रयत्नों से अकबर ने समझ लिया था कि हिन्दुओं के सहयोग से ही साम्राज्य को स्थिरता प्राप्त होगी। अकबर ने राजपूतों की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया, उनसे वैवाहिक संबंध स्थापित किये। अपने अधीन राजपूत राजाओं से उसने उदार व्यवहार किया और उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाई। अकबर ने राज्य के उच्च पदों पर राजपूतों को नियुक्ति दी।

अकबर की इस नीति का प्रभाव कुछ राजपूत राजाओं पर पड़ा। आश्वस्त होकर वे मुगलों की सेवा में आ गए। परिणामस्वरूप मुगल शासन को अनेक वीर राजपूतों की सेवाएँ प्राप्त हो गईं।

अकबर की धार्मिक नीति

अकबर ने उदारता तथा सहिष्णुता की नीति अपनाई। उसने हिन्दुओं के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाते हुए जजिया कर समाप्त कर दिया, गौ हत्या पर रोक लगा दी। साथ ही बलपूर्वक मुस्लिम बनाने तथा तीर्थयात्रा कर पर भी रोक लगा दी। उसने सभी धर्मों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये फतेहपुर सीकरी में एक पूजागृह (इबादत खाना) का निर्माण करवाया। वहाँ पर अकबर सभी धर्मों (हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, जैन, बौद्ध) के विद्वानों के साथ सत्संग करता था। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि सभी धर्मों के मूल सिद्धांत एक से हैं। सभी धर्मों के अच्छे सिद्धांतों में सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से अकबर ने दीन-ए-इलाही नामक एक समूह बनाया। दीन-ए-इलाही का शाब्दिक अर्थ था— ''ईश्वर का धर्म''।

अकबर की शासन व्यवस्था

अकबर की शासन व्यवस्था नई नहीं थी। उसने तुर्क अफगान शासन पद्धति विशेषतः शेरशाह की पद्धति को आंशिक परिवर्तनों के साथ अपनाया था। विशाल साम्राज्य 15 सूबों और सूबे जिलों में बँटे हुए थे। सूबेदार, दीवान (वित्त विभाग का अधिकारी), काजी (न्याय विभाग का अधिकारी), फौजदार (सैनिक अधिकारी), कोतवाल आदि महत्वपूर्ण अधिकारी होते थे।

अकबर के समय के भूमि सुधार महत्वपूर्ण हैं। इसका श्रेय अकबर के दीवान टोडरमल को है, जिन्होंने भूमि की नाप करवाई और भूमि की उर्वरा शक्ति के आधार पर लगान निर्धारित किया गया। राज्य की आय के दो मुख्य साधन थे - एक भूमि का लगान और दूसरा व्यापार पर कर। अकबर के काल में देश और विदेश में व्यापार प्रगति पर था। कपड़े बुनना, रंगना, दस्तकारी, कढ़ाई, युद्ध सामग्री निर्माण, कागज बनाना, विभिन्न धातुओं के बर्तन बनाना आदि उद्योग धंधे तथा सूती वस्त्र उद्योग विकसित थे। व्यवसायों में कृषि मुख्य था। मछली पकड़ना, नमक बनाना, अफीम और शराब बनाना भी महत्वपूर्ण व्यवसाय थे।

अकबर की मनसबदार व्यवस्था

अकबर साम्राज्यवादी शासक था। अतः उसने सुसंगठित सैन्य व्यवस्था की स्थापना पर विशेष जोर दिया। गुप्तचर व्यवस्था व डाक व्यवस्था को सुधारा गया। मुगल राज्य की सैन्य प्रकृति को देखते हुए, प्रशासनिक तंत्र को अब सैन्य स्तर पर संगठित किया गया। सरकारी सेवा करने वाले अधिकारियों को भी सैन्य पद दिए गए, जिन्हें 'मनसब' कहा जाता था। इस पद को प्राप्त करने वाला अधिकारी/सरदार 'मनसबदार' कहलाता था। अपने अन्तर्गत आने वाले सैनिकों की संख्या के अनुसार मनसब छोटा या बड़ा होता था। मनसब 1000 से 50000 तक के होते थे। सम्राट किसी भी मनसबदार की सेना का इच्छानुसार उपयोग कर सकता था। कुछ मनसबदारों को सेना के रखरखाव के लिये भूमि (जागीर) दी जाती थी, जबकि कुछ मनसबदारों को नकद वेतन भी दिया जाता था।

साहित्य और कला का विकास

अकबर के काल में साहित्य और कला का अच्छा विकास हुआ। अब्दुल रहीम खानखाना, रसखान, अबुल फजल, फैजी, सूरदास, तुलसीदास, केशवदास आदि प्रसिद्ध कवि और विद्वान इसी काल में हुए थे। अकबर ने संगीत तथा चित्रकला को भी संरक्षण दिया। विदेशों से चित्रकार आमंत्रित किये गये। चित्रकला में फारसी और भारतीय शैलियों का समन्वय होना शुरु हुआ।

चित्र क्र.-35: बुलन्द दरवाजा, फतेहपुर सीकरी

वास्तुकला

इस काल में ही वास्तुकला में फारसी और ईरानी शैलियों के समन्वय से भवन बनाये गये। इलाहाबाद, आगरा तथा लाहौर में किले

बनवाये गये। अकबर ने फतेहपुर सीकरी नामक शहर आगरा के निकट बसवाया। वहाँ सुन्दर इमारतें बनवायी गईं। जिनमें दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, पंचमहल, जोधाबाई का महल, बीरबल का महल, जामा मस्जिद, शेख सलीम चिश्ती की दरगाह व बुलंद दरवाजा उल्लेखनीय हैं।

अकबर, कवियों, साहित्यकारों, चित्रकारों, संगीतज्ञों का संरक्षक था। उसके दरबार में गुणवत्ता को उच्च स्थान प्राप्त था।

ऐसा माना जाता है कि अकबर के दरबार में निम्नलिखित नौ रत्न थे–

1.	अबुल फजल	-	विद्वान व सलाहकार
2.	राजा मानसिंह	-	अनुभवी सेनापति
3.	राजा टोडरमल	-	प्रसिद्ध भूमि सुधारक
4.	तानसेन	-	संगीतकार
5.	बीरबल	-	चतुर वाकपटु सलाहकार
6.	हकीम हुक्काम	-	राजवैद्य
7.	अब्दुल रहीम खानखाना	-	कवि
8.	फैजी	-	कवि व दार्शनिक
9.	मुल्ला दोप्याजा	-	मसखरा, मनोरंजनकर्त्ता

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए –

(1) पानीपत का प्रथम युद्ध किसके बीच हुआ था–

(अ) अकबर और शेरशाह के बीच (ब) बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच

(स) हुमायूँ और शेरशाह के बीच (द) बैरमखाँ और हेमू के बीच

(2) मुगल साम्राज्य का संस्थापक किसे माना जाता है–

(अ) हुमायूँ (ब) अकबर

(स) शेरशाह (द) बाबर

(3) खानवा का युद्ध हुआ था–

(अ) 1526 ई. में (ब) 1556 ई. में

(स) 1527 ई. में (द) 1529 ई. में

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) बाबर द्वारा लिखी आत्मकथा का नाम ..... है।

(2) पानीपत का द्वितीय युद्ध सन् ..... में हुआ था।

(3) अकबर का संरक्षक ..... को बनाया गया था।

(4) शेरशाह का बचपन का नाम ..... था।

(5) घाघरा का युद्ध बाबर व ..... के बीच हुआ था।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) शेरशाह द्वारा जीर्णोद्धार की गई सड़क का नाम लिखिए?

(2) हुमायूँ को पुत्ररत्न की प्राप्ति कब व कहाँ हुई?

(3) हल्दीघाटी का युद्ध कब और किसके मध्य हुआ?

(4) अकबर के राज्य में आय के प्रमुख साधन क्या थे?

(5) अकबर के नौ रत्नों के नाम लिखिए?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) शेरशाह की शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए?

(2) अकबर द्वारा निर्मित इमारतों का वर्णन कीजिए?

(3) अकबर की राजपूत नीति को विस्तार से समझाइए।

परियोजना कार्य–

- अकबर द्वारा निर्मित प्रमुख इमारतों के चित्र संकलित कर कक्षा में दिखाइए।

पाठ 14

वैभव एवं विलासिता का युग

(जहाँगीर, शाहजहाँ)

आइए सीखें

- जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासन काल में राज्य विस्तार एवं प्रमुख घटनाएँ।
- उपरोक्त शासकों के काल की उल्लेखनीय विशेषताएँ।

अकबर ने अपने शासन काल में साम्राज्य को संगठित एवं सुव्यवस्थित किया। जिससे उसके उत्तराधिकारी जहाँगीर और बाद के दो शासक शाहजहाँ और औरंगजेब को शासन चलाने में सुविधाएँ मिली। इन तीनों बादशाहों के शासनकाल में साम्राज्य का विस्तार हुआ। इस काल में जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने साहित्य तथा कला के विकास को प्रोत्साहित किया। अनेक सुन्दर तथा वैभवशाली इमारतों का निर्माण हुआ। राजपरिवार तथा सामन्त वर्ग में विलासिता बढ़ी, अतः इस युग को "वैभव एवं विलासिता" का युग कहा जाता है।

■ जहाँगीर (1605 - 1627 ई.)

अकबर की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र जहाँगीर 1605 ई. में गद्दी पर बैठा। अकबर के समान वह कुशाग्र बुद्धि का व्यक्ति नहीं था। वह कला साहित्य तथा न्याय प्रेमी था। सिंहासन पर बैठते ही उसे अपने पुत्र खुसरों के विद्रोह का सामना करना पड़ा। जिसमें खुसरो परास्त हुआ और बन्दी बना लिया गया।

जहाँगीर के शासन काल की प्रमुख घटनाएँ

मेवाड़, कांगड़ा एवं अहमदनगर- महाराणा प्रताप की मृत्यु के पश्चात अमरसिंह मेवाड़ का राणा बना। उसने मुगलों से संघर्ष जारी रखा। जहाँगीर ने बहुत उदार शर्तों पर मेवाड़ से सन्धि करके मुगलों और मेवाड़ के बीच चले आ रहे लम्बे संघर्ष को समाप्त कर दिया। कुछ इतिहासकारों का मत हैं कि ये उदारता इसलिए भी हो सकती है, क्योंकि अपने पिता सम्राट अकबर के विरूद्ध विद्रोह के समय जहाँगीर ने मेवाड़ में शरण ली थी।

पंजाब में कांगड़ा के दुर्ग पर राजपूतों का अधिकार था। यहाँ पर प्रसिद्ध ज्वाला देवी का मंदिर है जहाँगीर ने सेना भेजकर वहाँ विजय प्राप्त की।

शिक्षण संकेत

- शिक्षक पूर्व में पाठ का अध्ययन कर कक्षा में कहानी के रूप में सुनाएँ।
- मानचित्र की सहायता से मुगलों के राज्य विस्तार को स्पष्ट करें।
- इस पाठ के अन्तर्गत आने वाले काल के वैभव को दर्शाने वाले चित्र छात्रों को दिखाकर पाठ की अवधारणा को स्पष्ट करें।

अकबर ने चाँद बीवी को परास्त करके अहमदनगर पर विजय प्राप्त की थी और उसे अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया था, परन्तु यह विजय अल्पकालीन सिद्ध हुई। जहाँगीर के समय में अहमदनगर का रक्षक मलिक अम्बर था जो कि प्रसिद्ध योद्धा तथा कुशल राजनीतिज्ञ था। जहाँगीर ने अहमदनगर पर विजय प्राप्त करने का कार्य शाहजादा खुर्रम को सौंपा। खुर्रम ने मलिक अंबर को संधि करने के लिए विवश कर दिया। इस सफलता के लिये जहाँगीर ने शाहजादा खुर्रम को शाहजहां की उपाधि प्रदान की। फिर भी मलिक अंबर की मृत्यु तक अहमदनगर वास्तविक रूप से जीता नहीं जा सका।

सिक्खों से शत्रुता- सिक्खों के गुरू अर्जुनदेव से जहाँगीर क्रोधित था क्योंकि उन्होंने विद्रोह के समय खुसरो की आर्थिक सहायता की थी। जहाँगीर ने गुरू अर्जुनदेव पर आर्थिक दण्ड लगाया, जिसे देने से इंकार करने पर गुरु को मौत के घाट उतार दिया गया। इस घटना से शांतिप्रिय सिक्खों को चोट पहुँची और वे मुगल शासकों के विरोधी बन गए।

अफगानों से संघर्ष- अफगानिस्तान के कंधार प्रान्त को ईरान के बादशाह ने जीत लिया था (जो मुगलों के अधीन था) इससे मुगल साम्राज्य को हानि हुई क्योंकि पश्चिम एशिया के साथ भारत के व्यापार में कंधार नगर का बड़ा महत्व था। जहांगीर ने कंधार पर विजय प्राप्त करने के लिये प्रयास किये किन्तु वह सफल नहीं हो सका।

खुर्रम का विद्रोह- जहाँगीर के पुत्र खुर्रम (शाहजहाँ) को इस बात की चिन्ता हुई कि कहीं उसके भाइयों में से कोई अन्य जहाँगीर का उत्तराधिकारी न बना दिया जाए, इसलिए उसने पिता के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। जहाँगीर ने महाबत खान को भेजकर विद्रोह का दमन किया।

पुर्तगाली एवं अंग्रेजों से सम्बन्ध- पुर्तगाली भारत में व्यापार करके सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने समुद्री डकैती आरम्भ कर दी थी। वे भारतीय जहाजों पर आक्रमण करने लगे थे। इससे जहाँगीर अत्यधिक क्रोधित हुआ। जब तक पुर्तगालियों ने अपनी भूल को स्वीकार नहीं कर लिया तब तक मुगल राज्य के व्यापारियों के साथ उन्हें व्यापार करने की आज्ञा नहीं दी गई।

जहाँगीर के शासनकाल में इंग्लैण्ड के सम्राट ने सर टामस रो और केप्टन हाकिन्स को मुगल दरबार में अपना राजदूत बनाकर भेजा। सर टामस रो ने जहांगीर के साथ व्यापारिक सन्धि करने का प्रयास किया। केप्टन हाकिन्स तीन वर्ष आगरा में रहा। उसने अपने यात्रा विवरण में मुगल दरबार का सुन्दर चित्रण किया है।

कला साहित्य तथा न्याय प्रेमी- जहाँगीर साहित्य में रुचि रखता था। उसने अपने संस्मरण 'तुजके जहांगीरी' में लिखे, जिसमें उसकी सुन्दर फारसी शैली देखी जा सकती है। वह चित्रकला का अच्छा ज्ञाता था। उसके दरबार में श्रेष्ठ चित्रकार थे।

जहाँगीर के शासन की महत्वपूर्ण उपलब्धि उसकी न्याय व्यवस्था थी। सामान्य जनता को सही न्याय न मिलने पर सम्राट से सीधे सम्पर्क स्थापित करने के लिए उसने राजमहल की दीवार पर सोने की जंजीर वाली घंटी लगवा दी थी।

जहाँगीर ने लिखा- इन्साफ की सुस्ती और तरफदारी देखे तो वे मजलूम लोग (पीड़ित) इस जंजीर को हिला दिया करें ताकि मैं उनकी आवाज सुनकर खुद फरियाद सुन सकूँ।

जहाँगीर अत्यधिक मद्य प्रेमी था। नशे की आदत ने उसे विलासी तथा सुस्त बना दिया था। शनैः शनैः साम्राज्य पर उसकी पकड़ ढीली पड़ती गई। सम्राट की विलासिता का प्रभाव राज दरबार पर भी पड़ा।

नूरजहाँ का शासन पर प्रभाव- 1611 ई. में जहाँगीर ने नूरजहाँ से विवाह किया। वह सुन्दर और बुद्धिमान स्त्री थी। उसने राजदरबार को सुव्यवस्थित करने के लिए नियम निर्धारित किए। उसने वेशभूषा और आभूषण के नए-नए नमूने प्रचलित किए। गुलाब के इत्र की अविष्कारक नूरजहाँ ही मानी जाती है। नूरजहाँ में राज्य चलाने की अपूर्व क्षमता थी। प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य में जहाँगीर उसकी मदद लिया करता था। आगे चलकर जहाँगीर की विलासिता के फलस्वरूप वह इतनी शक्तिशाली हो गई थी कि राज्य के सिक्कों एवं शाही फरमानों में जहाँगीर के साथ उसका नाम भी लिखा जाने लगा था। सन् 1627 ई. में जहांगीर की मृत्यु हो गई।

■ शाहजहाँ (1628-1657)

जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात उसका तृतीय पुत्र शाहजहाँ (खुर्रम) 1628 ई. में गद्दी पर बैठा। शाहजहाँ के युग की सम्पन्नता, शाही वैभव, कला तथा साहित्य की प्रगति आदि चहुँमुखी विकास को देखकर इस काल को मुगल काल की सम्पन्नता (वैभव) का काल कहा जाता है।

शाहजहाँ के शासन काल की प्रमुख घटनाएँ

बुन्देलखण्ड के जुझारसिंह का विद्रोह- जुझारसिंह बुन्देलखंड का नरेश था। उसने शाहजहाँ के विरूद्ध विद्रोह कर दिया पर जुझारसिंह को शाहजहाँ से सन्धि करनी पडीं। परन्तु कुछ समय पश्चात शाहजहाँ के आदेशों को न मानने के कारण पुनः जुझारसिंह का दमन किया गया।

शाहजहाँ की दक्षिण नीति- दक्षिण क्षेत्र मुगलों के लिए कठिनाइयों का क्षेत्र बना हुआ था। जहाँगीर के समय अहमदनगर, गोलकुण्डा तथा बीजापुर मुगलों के प्रभाव क्षेत्र में आ गए थे। परन्तु यह पुनः स्वतन्त्र हो गए थे। शाहजहाँ ने अहमदनगर के राज्य को जीत लिया। गोलकुन्डा तथा बीजापुर ने मुगलों का आधिपत्य स्वीकार कर लिया और शांति बनाये रखने के लिए सन्धि कर ली।

शाहजहाँ ने अपने पुत्र औरंगजेब को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। औरंगजेब ने गोलकुंडा और बीजापुर के राज्यों को जीतकर मुगल साम्राज्य में मिलाने का प्रयास किया परन्तु उसे पूर्ण सफलता प्राप्त न हो सकी।

उत्तर पश्चिम नीति- शाहजहाँ ने उत्तर पश्चिम सीमा को सुरक्षित करने के लिए मध्य एशिया के बल्ख और बदख्शाँ को अपनी सेनाएँ भेजी। उसने ईरान के बादशाह से कंधार को पुनः जीत लिया था, परन्तु कुछ समय पश्चात कंधार उसके हाथों से पुनः निकल गया।

पुर्तगालियों से संघर्ष- हुगली क्षेत्र पुर्तगालियों का उपनिवेश था। शाहजहाँ का पुर्तगालियों से संघर्ष हुआ। पुर्तगाली इस स्थान को आधार बनाकर बंगाल की खाड़ी में समुद्री डकैती करते थे। मुगल सेनाओं ने उन्हें हुगली क्षेत्र से बाहर निकाल दिया।

शाहजहाँ की स्थापत्य कला- शाहजहाँ के शासन काल में स्थापत्य कला में प्रगति हुई। शाहजहाँ द्वारा निर्मित दिल्ली का लाल किला तथा दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, जामा मस्जिद, ताजमहल आदि स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण है।

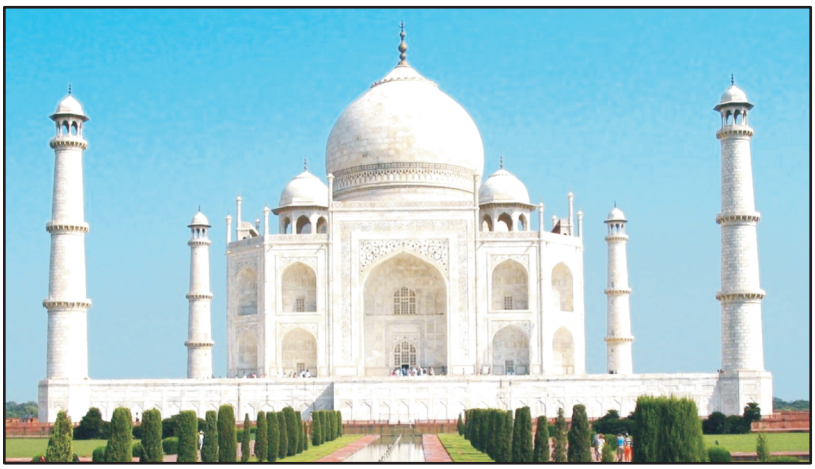

चित्र क्र.-36: ताजमहल

शाहजहाँ के नाम के साथ उसके रत्न जड़ित मयूर सिंहासन का उल्लेख आता है। मयूर सिंहासन में जड़ा विख्यात कोहिनूर हीरा उसकी शान-शौकत और ऐश्वर्य का प्रतीक था।

मयूर सिंहासन बनवाने में सात वर्ष लगे थे। इसमें हीरे जवाहरात के साथ कोहिनूर हीरा भी जड़ा था। यह सिंहासन दो मयूरों की आकृति से अलंकृत था। 1739 ई. में ईरानी आक्रमणकारी नादिरशाह यह सिंहासन अपने साथ ले गया था।

शाहजहाँ के अंतिम वर्ष

सन् 1657 में शाहजहाँ बीमार पड़ गया। चिकित्सकों को उसके बचने की आशा नहीं रही। उसकी मृत्यु की अफवाहें फैल गईं। उसके चारों पुत्रों - दारा, शुजा, औरंगजेब और मुराद के बीच उत्तराधिकार के लिए युद्ध छिड़ गया। चारों प्रौढ़वय के थे और उन्हें सैनिक और नागरिक कार्यों का पर्याप्त अनुभव था। इस कारण मुगल साम्राज्य के सिंहासन पर अधिकार करने की चारों की महत्वाकाँक्षा थी। उत्तराधिकार के संघर्ष में औरंगजेब ने अपने तीनों भाइयों का अंत करके सिंहासन पर अधिकार कर लिया। उसने अपने पिता सम्राट शाहजहाँ को कैद कर लिया। शाहजहाँ 9 वर्ष तक आगरे के किले में कैद रहा। सन् 1666 में शाहजहाँ की मृत्यु हो गई।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) अपने शासन काल के आरंभ में जहाँगीर को किसके विद्रोह का सामना करना पड़ा–

(अ) खुसरो (ब) खुर्रम

(स) सलीम (द) शुजा

(2) ताजमहल का निर्माण कराया था-

(अ) अकबर ने (ब) जहाँगीर ने

(स) शाहजहाँ ने (द) औरंगजेब ने

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) सर टामस रो और कैप्टन हाकिन्स ---------- के शासनकाल में भारत आए थे।

(2) मयूर सिंहासन में ---------- जड़ा हुआ था।

(3) ---------- व्यापारी समुद्री डकैती किया करते थे।

(4) ---------- अहमदनगर राज्य का प्रसिद्ध योद्धा और कुशल प्रशासक था।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) जहाँगीर ने गुरु अर्जुनदेव का वध क्यों करवाया था?

(2) सामान्य जनता को सही न्याय मिल सके,इस उद्देश्य से जहाँगीर ने क्या व्यवस्था का थी?

(3) नूरजहाँ का शासन पर क्या प्रभाव था?

(4) शाहजहाँ द्वारा निर्मित प्रमुख इमारतों के नाम लिखिए।

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) जहाँगीर और शाहजहाँ के काल को वैभव एवं विलासिता का युग क्यों कहा जाता है?

परियोजना कार्य

- शाहजहाँ के शासनकाल की प्रसिद्ध इमारतों के चित्र एकत्रित करके उनकी विशेषताओं के विषय में कक्षा में चर्चा कीजिए।

पाठ 15

राष्ट्रपति एवं केन्द्रीय मंत्रि-परिषद्

आइए सीखें

- राष्ट्रपति पद की अर्हताएँ, चुनाव एवं शक्तियाँ।
- उपराष्ट्रपति पद की अर्हताएँ, चुनाव एवं शक्तियाँ।
- प्रधानमंत्री, संघीय मंत्रि-परिषद् का गठन एवं कार्य।

सम्पूर्ण देश के लिए काम करने वाली सरकार को केन्द्रीय सरकार या संघ सरकार कहा जाता है। इस पाठ में केन्द्रीय सरकार के दूसरे अंग कार्यपालिका के बारे में सीखेंगे। इसमें राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं केन्द्रीय मंत्रि-परिषद् शामिल हैं।

संसदीय शासन प्रणाली में दो प्रकार की कार्यपालिकाएँ होती हैं— (1) नाममात्र की कार्यपालिका एवं (2) वास्तविक कार्यपालिका। नाममात्र की कार्यपालिका में देश का प्रधान (राष्ट्रपति) केवल संवैधानिक प्रधान होता है। उसकी शक्तियों का वास्तविक प्रयोग मंत्रि-परिषद् करती है। नाममात्र की कार्यपालिका का प्रधान निर्वाचित अथवा वंशानुगत हो सकता है। इंग्लैण्ड में यह वंशानुगत है तथा भारत में निर्वाचित होता है। वास्तविक कार्यपालिका में देश का मुखिया निर्वाचित होता है तथा शक्तियों का प्रयोग स्वयं करता है। अमेरिका का राष्ट्रपति देश का वास्तविक कार्यपालिका प्रमुख है।

राष्ट्रपति

राष्ट्रपति, भारत के शासन का प्रमुख होता है। सरकार का समस्त कार्य राष्ट्रपति के नाम से किया जाता है।

भारत का राष्ट्रपति बनने के लिए निम्नांकित अर्हताएँ आवश्यक हैं—

1. वह भारत का नागरिक हो।
2. वह 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।
3. वह लोकसभा का सदस्य चुने जाने की योग्यता रखता हो।
4. वह किसी सरकारी लाभ के पद पर कार्यरत न हो।

राष्ट्रपति का चुनाव राज्यों की विधानसभा, विधान परिषद् तथा संसद के निर्वाचित सदस्यों द्वारा किया जाता है। इसे अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली कहते हैं।

कानून बनाने में राष्ट्रपति की प्रमुख भूमिका होती है। कोई भी विधेयक तब तक कानून नहीं बनता, जब तक उस पर राष्ट्रपति के हस्ताक्षर नहीं हो जाते। राष्ट्रपति यदि चाहे तो विधेयक को

पुनः विचार के लिए सदन को दोबारा लौटा सकते हैं। वे कोई सुझाव भी विधेयक में शामिल करने के लिए दे सकते हैं। यदि संसद के दोंनो सदन दोबारा उसी विधेयक को पारित कर देते हैं तो राष्ट्रपति को हस्ताक्षर कर अपनी स्वीकृति प्रदान करना ही पड़ती है।

राष्ट्रपति की शक्तियाँ

राष्ट्रपति की शक्तियाँ निम्नानुसार हैं–

- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री की नियुक्ति करते हैं। प्रधानमंत्री के सुझाव पर अन्य मंत्रियों की नियुक्ति भी राष्ट्रपति ही करते हैं।
- राष्ट्रपति ही राज्यों के राज्यपाल, सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है।
- राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति भी राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
- जब संसद की बैठकें न हो रही हों तथा किसी विषय पर कानून बनाने की आवश्यकता पड़ जाए, ऐसी स्थिति में राष्ट्रपति अध्यादेश जारी कर सकते हैं। इन्हें कानून के ही समान मान्यता प्राप्त है।
- राष्ट्रपति देश के मुखिया हैं, अतः इन्हें क्षमादान का अधिकार भी प्राप्त है। न्यायालय द्वारा यदि किसी व्यक्ति को मृत्युदण्ड दिया गया हो, उसे राष्ट्रपति, चाहें तो माफ कर सकते हैं या मृत्युदण्ड को आजीवन कारावास में बदल सकते हैं।

कार्यकाल

राष्ट्रपति का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है। यदि राष्ट्रपति संविधान का उल्लंघन करते हैं, तो महाभियोग द्वारा उन्हें उनके पद से हटाया जा सकता है।

उपराष्ट्रपति

हमारे संविधान में उपराष्ट्रपति पद की व्यवस्था है। राष्ट्रपति यदि किसी कारणवश कार्य न कर रहे हों तो उपराष्ट्रपति उनके दायित्वों को सम्पन्न करता है।

उपराष्ट्रपति चुने जाने की योग्यताएँ राष्ट्रपति के समान ही हैं। इनका कार्यकाल 5 वर्ष का होता है। उपराष्ट्रपति का चुनाव संसद के दोनों सदनों के सदस्यों द्वारा गुप्त मतदान से किया जाता है। उपराष्ट्रपति राज्य सभा के पदेन सभापति होते हैं। वे राज्यसभा की बैठकों की अध्यक्षता करते हैं। राज्यसभा में प्रस्तुत किए गए विधेयकों पर चर्चा करवाते हैं। किसी विधेयक के पारित किए जाते समय मतदान में स्वयं भाग नहीं ले सकते क्योंकि वे राज्यसभा के निर्वाचित सदस्य नहीं होते हैं।

प्रधानमंत्री एवं संघीय मंत्रि-परिषद्

हमारे संविधान में राष्ट्रपति की सहायता के लिए एक मंत्रि-परिषद् की व्यवस्था की गई है। मंत्रि-परिषद् का मुखिया प्रधानमंत्री होता है।

हमारे संविधान में दी गई व्यवस्था के अनुसार लोकसभा में जिस दल को बहुमत प्राप्त होता है, उस दल के नेता को राष्ट्रपति सरकार गठित करने के लिए आमंत्रित करता है। प्रधानमंत्री एवं मंत्रि-परिषद् के अन्य सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ राष्ट्रपति द्वारा दिलाई जाती है।

प्रधानमंत्री की सलाह से ही राष्ट्रपति मंत्रि-परिषद् के अन्य सदस्यों की नियुक्ति करता है। इसे ही संघीय मंत्री-परिषद् कहते हैं।

संघीय मंत्रि-परिषद् का सदस्य कौन हो सकता है?

जो व्यक्ति संसद के किसी सदन के सदस्य होते हैं, वे ही प्रायः मंत्री बनाए जाते हैं। यदि कोई व्यक्ति मंत्री बनते समय संसद के किसी सदन के सदस्य नहीं हैं, तो उसे छः माह के भीतर किसी सदन का सदस्य निर्वाचित होना आवश्यक है।

प्रधानमंत्री एवं मंत्रि-परिषद् के कार्य

भारतीय संविधान में प्रधानमंत्री का पद बहुत महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री मंत्रि-परिषद् का गठन करता है। मंत्रियों के बीच कार्य विभाजन करता है। वह मंत्रिमंडल का प्रधान होता है। उसके त्यागपत्र देने पर मंत्रिमण्डल का विघटन हो जाता है।

देश की संसद द्वारा बनाए गए कानूनों एवं नीतियों को लागू करने की जिम्मेदारी प्रधानमंत्री तथा अन्य सभी मंत्रियों (मंत्रि-परिषद्) की होती है। मंत्रिमण्डल देश के प्रशासन, आर्थिक सुधार, सुरक्षा एवं विदेशी राज्यों से संबंध, संबंधी नीतियों का निर्धारण करता है। मंत्रि-परिषद् के कई विभाग (मंत्रालय) जैसे- गृह मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, विदेश मंत्रालय आदि होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) राष्ट्रपति का कार्यकाल होता है–

(अ) 6 वर्ष (ब) 1 वर्ष

(स) 5 वर्ष (द) 4 वर्ष

(2) क्षमादान का अधिकार प्राप्त है–

(अ) प्रधानमंत्री को (ब) रक्षामंत्री को

(स) उपराष्ट्रपति को (द) राष्ट्रपति को

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन ..... होता है।

(2) मंत्रियों में विभागों का बंटवारा ..... करता है।

(3) राष्ट्रपति के चुनाव में राज्य विधानमंडलों और ..... के सदस्य मतदान करते हैं।

(4) राज्यों के राज्यपालों की नियुक्ति ..... के द्वारा की जाती है।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) किसी विधेयक पर उपराष्ट्रपति द्वारा मतदान में क्यों भाग नहीं लिया जाता है?

(2) राष्ट्रपति द्वारा अध्यादेश कब जारी किया जाता है?

(3) संसदीय शासन प्रणाली में कितने प्रकार की कार्यपालिकाएँ होती हैं?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) भारत का राष्ट्रपति बनने के लिए कौन-कौन सी अर्हताएँ आवश्यक हैं?

(2) राष्ट्रपति को प्राप्त शक्तियों का वर्णन कीजिए?

परियोजना कार्य–

- रविवार के दिन अपने अभिभावकों की मदद से अपने गाँव/नगर के स्थानीय जन प्रतिनिधियों द्वारा क्षेत्र विकास के लिए किए गए कार्यों की सूची तैयार कीजिए।